

MBh. 2, 636. प्रसूतिभाजः सर्गस्य KUMĀRAS. 2, 7. पादाम्बुजान्यम्बुजकात्ति-
भाजि R. 4, 4. कर्माण्यधिकारभाजि (so ist zu lesen mit K.) PRAB. 109,
13. DHŪRTAS. in LA. 68, 12. स (उत्साहः) वीर्यमतिशक्तिभाक् AK. 1, 1,
2, 29. उपभोगभाज्ययि धनानि mit Genuss verbunden, genossen werdend
Spr. 1991. एकापि (दिक्) प्राच्यादिव्यपदेशभाक् so v. a. erhält verschiedene
Benennungen BUĀSHĀP. 46. जातिर्लिङ्गानां च न सर्वभाक् P. II, S. 462. अनुद्य-
भाजिन्दि so lange der Mond nicht aufgegangen ist Spr. 1087. — d) inneha-
bend, einnehmend (einen Sitz, Platz), bewohnend, wohnend in, an: विष्टर°
RAGH. 5, 3. सवितानर्कम् 19, 39. अनुचितस्थितिदेश° Spr. 116. यमुना° RAGH.
15, 2. सागर° (चन्द्र) NAIŚU. 22, 44. mit dem acc.: पृथक्पृथगवस्थानं भाजि
(wohl अवस्थानभाजि zu lesen) MĀRK. P. 102, 8. — e) hingehend zu: नदीवि-
भयकूलभाक् RAGH. 12, 35. अङ्क° (फल) in den Schooss kommend so v. a.
zufallend KIR. 5, 52. — f) verehrend: अयि चेत्सुडराचरो भजते मामनन्य-
भाक् BHAG. 9, 30. लब्धवर्ण° RAGH. 11, 2. — 2) Angelegenheit: व्यर्सी-
त्कृताकृतेभ्यः लितिपालभाभ्यः BHATT. 3, 21. — Vgl. अतर°, अत°. अर्थ°,
अर्कभाज् (auch LĀṬ. 6, 2, 23. 7, 20), उर्ध्व°, काम°, कीर्ति°, चतुर्थ°, ज-
न्म°, देह°, धाम°, पथि°, पाद°, पिण्ड°, पितु°, पुण्य°, पूर्व°, प्रथम°. प्रधान°, प्रेत्य°, फल°, भक्ति°, भाग°, मन्द°, वाम°, शरीर°, सवन°.

भाजक् indecl. चादि zu P. 4, 4, 57 und स्वरादि zu 4, 1, 37. schnell, eiligst
WILSON nach WILKINS. Wohl fehlerhaft für तजक्, wie die v. l. an der
ersten Stelle hat.

भाजक (von caus. von भज्) m. Divisor COLEBR. Alg. 8.

भाजन (wie eben) 1) n. proparox. Stellvertretung: instr. an der Stelle
von: धिष्ठ्यानां वा एते भाजनेन ÇAT. Br. 3, 3, 2, 11. तदत्र पितृणां भाजनेन
4, 8, 4, 40. Am Ende eines comp. (oxyl.) n. Stellvertreter, vertretend,
gleichgeltend, gleichbedeutend ÇAT. Br. 2, 3, 4, 23. सकृदुल्लिखति तद्वदि-
भाजनम् das stellt die Veda vor 4, 2, 13. उल्लिष° 3, 3, 2, 4. स हि तेषा-
मिन्द्रभाजनं भवति 3, 4, 2, 15. 3, 22. AIT. Br. 1, 22. पत्नीभाजनं वै नेष्टा der
Neshtar stellt das Weib vor 6, 3. ÇĀṆKH. GRHJ. 6, 3. यावत्प्रस्तरभाजनं
तावत्परिशिष्टि ÇAT. Br. 2, 6, 4, 15. — 2) am Ende eines adj. comp. (f.
घ्रा) a) theilhabend an, theilhaft, berechtigt zu: एते देवा अमोमयाः पशु-
भाजनाः AIT. Br. 2, 18. पयोभाजन ÇĀṆKH. Br. 10, 6. 13, 2. घृत° ÇAT. Br.
6, 6, 4, 11. असृग्भाजनानि क्व वै रत्नंसि ÇĀṆKH. Br. 10, 4. सुराप्य अत्म-
त्यागिन्यो नशिचोदकभाजनाः (उदकदानार्थैरिधैर्देहिकास्य भाजना न भव-
ति । भाजयतीति भाजनाः सर्पिण्डादीनामाशौचादिनिमित्तभूता न भवति
MĪT. 3, 3, 2 v. u.) JĀṬ. 3, 6. तां यशोभजनां धन्याम् R. GORR. 2, 64, 8.
पदनुग्रहभाजनः dessen Gunst er erfahren hat BUĀG. P. 4, 14, 33. — b)
gehörig zu, in Beziehung stehend zu: महतो क्व वै देवविशो ऽस्तरितभा-
जनाः AIT. Br. 1, 10. एषा तृतीयसवनभाजना सती मध्यंदिने शस्यते 3, 18.
सोनाट्यभाजना वा अमावास्या ÇAT. Br. 2, 4, 4, 20. — 3) n. das Dividiren
COLEBR. Alg. 8. — 4) Gefäss AK. 2, 9, 33. TRIK. 3, 3, 250. H. 1026. MED.
n. 101. HĀR. 138. HALĀJ. 2, 172. राजतैर्भाजनैरेषाम् देवानाम् — वार्यपि
अद्वया दत्तम् M. 3, 202. न पदौ धावयेत्कांस्ये कदाचिदपि भाजने 4, 65.
अन्नमेषां पराधीनं देयं स्याद्विभजने 10, 54. JĀṬ. 1, 230. स्थालीपिठर-
भाजनम् MBh. 7, 2159. 12, 3252. R. 4, 33, 4. Suçr. 1, 138, 16 (सु°). 237, 1.
2, 221, 6. 333, 6. RAGH. 5, 22. Spr. 2398. MĀRK. P. 34, 101. KATHĀS. 3,
47. PRAB. 39, 3. कांस्य° Suçr. 1, 74, 19. आपस° 2, 341, 2. ब्रूय° MĀRK.
P. 13, 26. माणि° KATHĀS. 43, 131. अयः सुराभाजनस्याः M. 11, 147. जल°
V. Theil.

R. 3, 4, 49. घृत° Suçr. 2, 30, 17. 73, 6. पुण्य° ÇĀK. 44, 1. °चारिक BURN.
Intr. 261, N. 2. Am Ende eines adj. comp. (f. घ्रा): कुब्जाम् — सानुले-
पनभाजनाम् HARIV. 4483. KATHĀS. 43, 228. In übertr. Bed. Gefäss, Be-
hälter für so v. a. der Ort (die Person), der Etwas aufnimmt, wo sich
Etwas versammelt findet, wohin Etwas strömt: = योग्य (vgl. पात्र)
TRIK. MED. मोसशोणितमूत्रपुरीषादिभाजनेन शरीरेणान्यमान्द्यापदुत्वा-
दिभाजनेनेन्द्रियग्रामेषाशनायापिपासाशोकमोहभाजनेनातःकरणेन च ÇĀṆKH.
bei WIND. SANCARA 123. VEDĀNTAS. (Allah.) No. 144. अन्यापि किं न
खलु भाजनमीदृशानाम् SĀU. D. 36, 15. बभूव सः । भाजनं सर्वरत्नानामम्बु-
राशिरिवाम्भसाम् VID. 4. स श्रियो भाजनं नरः Spr. 2424. 3160. KATHĀS.
34, 205. दृढं सो ऽर्थस्य भाजनम् Spr. 2431. स एव लक्ष्म्या यशसा च भाज-
नम् 3282. शास्त्रज्ञो ऽपि — भवति विरलो भाजनं सद्गतीनाम् 2978. श्री°
1637. 4443. कीर्ति° ÇĀK. in LA. (II) 33, 10. कल्याणभाजनं ये तु HARIV.
1028. PAŚĀR. 4, 3, 31. Verz. d. Oxf. H. 263, a, 3. भारवाहीव क्लेशस्यैव
भाजनम् Spr. 1376. येन स्यां नैव दुःखानां भाजनं पुनरीदृशाम् KATHĀS. 36,
106. प्रीतिविश्रम्भ° Spr. 3023. भोगस्य भाजनं राजा न राजा कार्यभाजनम्
so v. a. der Fürst ist dazu da um zu genießen, nicht aber um Ge-
schäften nachzugehen, 2069. मदभिलषितभाजनं भूयाः so v. a. mögest du
meinen Wunsch vernehmen DHŪRTAS. in LA. 78, 17. राजाशब्दभाजनमा-
त्मानमपि चित्तयतु भवती so v. a. den Titel Fürstin führend, Fürstin
seiend MĀLAV. 12, 18. मन्त्री पञ्चमकृशब्दभाजनं जगतीभुजः RĀGA-TAR. 4,
511. तत्सुतो । साम्राज्यपुत्राजत्वभाजने im Besitze von 3, 102. जगतो ऽप्य-
स्य (= प्रथमपुत्रादेः Schol.) भाजनम् (विज्ञः) so v. a. Zuflucht HARIV. 4369.
क्षेत्रो दुःखस्य भाजनम् so v. a. Ursache Spr. 4863. सकललघिमभाजन-
मुदरम् Spr. एकः स एव im 4ten Th. — 5) n. ein best. Maass, = Āḍhaka
= 64 Pala ÇĀṆKH. SĀU. 1, 1, 20. Verz. d. Oxf. H. 307, b, 9. — 6) m. N. pr.
eines Mannes gaṇa विदादि zu P. 4, 1, 104. Davon patron. भाजन ebend.:
pl. भाजनाः gaṇa गोपवनादि zu 2, 4, 67. — Vgl. दीप°, पान°, यथाभाजनम्
भाजनता (von भाजन) f. das Gefässsein für, das Besitzen: आघ्रातप्र-
वरगुणगणकात्तभाजनतया BUĀG. P. 5, 1, 6.

भाजनत्व (wie eben) n. das Gefässsein für, Verdienen, Würdigsein:
नायं देव्या भाजनत्वं न नेयः सत्काराणामीदृशानामशोकः MĀLAV. 83.

भाजनवत् (von भाजन) adj. zur Erkl. von भद्र NIR. 4, 10. 11, 49. 12, 17.
भाजनीभूत भाजन + भूत) adj. zum Gefäss einer Sache geworden so v.
a. theilhaftig geworden: अन्नरा° KATHĀS. 29, 62.

भाजयु (vom caus. von भज्) adj. mittheilsam, freigebig: त्वमशौ विदर्थं
देव भाजयुः RV. 2, 1, 4.

भाजिन् (von भज्) adj. am Ende eines comp. 1) theilhabend an, theil-
haftig KĀND. Up. 3, 9, 2. fgg. वयमत्राशभाजिनः KUMĀRAS. 6, 74. भवति
स्वर्गभाजिनः ÇATR. 1, 22. Vgl. पुण्य°. — 2) verbunden mit: आक्रन्देना-
त्मना चैव पालिग्राहं प्रयोउयेत् । आक्रन्देन तदासारमाक्रन्दासारभाजिना ॥
KĀM. NĪTIS. 8, 46. WEBER, RĀMAT. Up. 308.

भाजिनी (von भज्) f. Vop. 4, 26. Reisbret (आणा) P. 4, 1, 12. भाजिनीक 6,
2, 71, Sch. In einer anderen Bed. भाजा P. 4, 1, 42, Sch.

भाज्य (von भज्) adj. zu dividiren, Dividend COLEBR. Alg. 8. SIDDHĀNTA-
CĪR. 13, 24. — MBh. 13, 201 fehlerhaft für भाज्य, wie die ed. Bomb. hat.

भाट (von 1. भट्) Miethgeld, Pachtgeld VRDDHA-M. in VIVĀDAK. 31, 11.
भाटक m. dass. H. Ç. 133. HALĀJ. 2, 418. KĀTJ., NĀRADA UND VRDDHA-M.